हिन्दुस्तान

एम्स में ब्रेन डेड युवती के अंगों से दो लोगों को मिला जीवन

एम्स ऋषिकेश

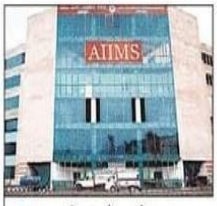

25 वर्षीय ब्रेन डेड युवती ने अंगदान से दो मरीजों को नई जिंदगी देकर पेश की मिसाल

- इक्कीस अप्रैल को सड़क हादसे में घायल युवती को लाया गया था एम्स ऋषिकेश
- आर्थिक हालत माली होने से इलाज का खर्च नहीं उठा पा रहे थे परिजन

लीवर ट्रांसप्लांट से एक मरीज को मिलेगी नई जिंदगी

वहीं लीवर ट्रांसप्लांट से एक मरीज को नई जिंदगी मिलेगी। अस्पताल प्रशासन ने डोनर के परिजनों के इस महान निर्णय की सराहना करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया। अंगदान की यह पहल न केवल जीवन बचाने का कार्य है, बल्कि समाज में जागरूकता और मानवता का संदेश भी देती है। एम्स के पीआरओ डॉ. श्रीलॉय मोहंती ने बताया कि अंगदान को पूरी तरह गुप्त रखा जाता है। वह बताते हैं कि बीते कुछ दिनों से पांच जरूरतमंदों के ब्लड सैंपल लेकर जांच की जा रही थी। जिसके बाद अंगदान के लिये दो लोगों का चयन किया गया है। इसके लिये उनके परिजनों द्वारा ब्लड भी डोनेट किया गया। बताया कि अंग प्रत्यारोपण में अधिक ब्लड की जरूरत पड़ती है।

ऋषिकेश, वरिष्ठ संवाददाता। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ऋषिकेश में एक 25 वर्षीय ब्रेन डेड युवती ने अंगदान से दो मरीजों को नई जिंदगी देकर मानवीय संवेदना की मिसाल पेश की है।

इस कठिन समय में उनके परिजनों ने साहसिक निर्णय लेते हुए लीवर और किड़नी दान करने की सहमति दी। यह निर्णय दो गंभीर रूप से बीमार मरीजों के लिए जीवनदायी साबित होगा। बीते 21 अप्रैल को सड़क दुर्घटना में घायल युवती को उसके परिजन इलाज के लिये एम्स ऋषिकेश लाये। बीते दस दिनों से महिला का आईसीयू में इलाज चल रहा था। दो दिन पूर्व जांच में युवती को ब्रेन हेमरेज होने की जानकारी डॉक्टरों ने परिजनों को दी। युवती के परिजन दिहाड़ी-मजदूरी का काम करते हैं। वह इलाज का खर्च वहन करने में भी समक्ष नहीं थे। एम्स ऋषिकेश के डॉक्टरों ने परिजनों से मुलाकात कर परिवार के लोगों को अंगदान का महत्व और पूरी प्रक्रिया समझायी। उन्होंने बताया कि महिला की मृत्यु पर अंगदान करने से दो लोगों को नई जिंदगी मिल सकती है। एम्स ऋषिकेश में नेफ्रोलॉजी विभाग में किडनी फेलियर से जूझ रहे एक मरीज को गुर्दा प्रत्यारोपित किया जाएगा। परिजनों के राजी होने और जांच के बाद अंगदान की प्रक्रिया पूरी की गई।

प्रधान टाइम्स

एम्स ऋषिकेश में पहली बार लीवर ट्रांसप्लांट सफल

अंगदान से युवती ने दी तीन लोगों को नई जिंदगी, एम्स ऋषिकेश में 13 घंटे में पूरा हुआ पहला लीवर ट्रांसप्लांट

राजेश शर्मा

ऋषिकेश। जाते -जाते तीन लोगों को जिंदगी दे गई युवती सड़क दुर्घटना में गंभीर घायल को एम्स चिकित्सकों ने घोषित किया था ब्रेन डेड बीते माह 21 अप्रैल से चल रहा था एम्स ऋषिकेश में उपचार ईश्वर के बाद यदि कोई किसी इंसान को जिंदगी दे सकता है तो वह सिर्फ अंगदान का पुनीत कार्य करने वाला व्यक्ति ही हो सकता है। और इस पुण्य के साक्षी और सशक्त माध्यम बनते हैं कलियुग में भगवान कहे जाने वाले चिकित्सक। एम्स,ऋषिकेश में बीती रात कुछ ऐसा ही करिश्मा हुआ। जिसने न सिर्फ चिकित्सकीय इतिहास को पलट कर रख दिया अपितु इसके साथ साथ एम्स ऋषिकेश ने प्रतिबद्धता, संकल्प के साथ सफलतम चिकित्सा का एक नया कीर्तिमान भी रच दिया है। इस प्रक्रिया के तहत एम्स, ऋषिकेश ने उत्तराखंड के तहत पहले लीवर ट्रांसप्लांट को सफलतापूर्वक अंजाम दिया, साथ ही संस्थान में बीते 3 वर्षों में 23वें व्यक्ति को सफलतापूर्वक किडनी प्रत्यारोपण किया गया।

बात करीब दस दिन पुरानी है। बीते माह 21 अप्रैल को एक सड़क दुर्घटना के एक 23 वर्षीया युवती गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसे समुचित उपचार के लिए एम्स ऋषिकेश में भर्ती किया गया। अस्पताल में इलाज के दौरान बीते बृहस्पतिवार को युवती को चिकित्सकीय टीम ने ब्रेन डेड घोषित कर दिया। इसके बाद एम्स संस्थान के चिकित्सकों ने युवती के परिजनों को युवती के अंगेन जरूरतमंद लोगों को दान कर उन्हें नया जीवन देने के पुण्य कार्य के लिए प्रेरित किया। चिकित्सकों के परामर्श के बाद अपनी जवान बेटी को खो चुके परिजनों ने मौत से जूझ रहे किसी व्यक्ति को जिंदगी देने का फैसला किया और एम्स के चिकित्सकीय टीम को अंगदान अंगेन डोनेशन की लिखित अनुमति प्रदान कर दी। युवती के परिजनों के इस निर्णय से जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहे तीन लोगों को नई जिंदगी मिल गई। यह सब एम्स ऋषिकेश के चिकित्सकों के टीम के सामुहिक संकल्पबद्ध प्रयासों से ही सफल हो पाया।

क्या कहती हैं निदेशक एम्स

सफलता का यह पहला पायदान है, एम्स संस्थान इस दिशा में आगे तीव्र गति से सततरूप से कार्य करते हुए उत्तराखंड के लोगों की चिकित्सा सेवा का कार्य करेगा। इसके साथ ही उन्हें अंगदान को लेकर जागरूक भी किया जाएगा। जिससे स्थानीय स्तर पर लोग स्वैच्छिक तौर पर अंगदान प्रत्यारोपण केलिए आगे आने को प्रेरित हों और इस कार्य में बढ़चढ़कर हिस्सा ले सकें। आम नागरिकों को भी जीवन के लिए जूझ रहे लोगों को अंगेन डोनेशन के लिए आगे आना चाहिए। जिससे समाज में दूसरे लोगों में भी सकारात्मक संदेश मिल सके।

एम्स,ऋषिकेश में हुआ पहला लीवर ट्रांसप्लांट, एक साथ हुए किडनी व लीवर प्रत्यारोपण

रातभर तत्परता से जीवन बचाने में जुटे रहे एम्स के चिकित्सक और टीम

एम्स, ऋषिकेश में बीते माह एक 23 वर्षीय युवती सड़क दुर्घटना में गंभीररूप से घायल युवती को भर्ती कराया गया था, जहां ट्रॉमा सेंटर में चिकित्सकों की निगरानी में उसका उपचार किया जा रहा था। बीते दिवस इलाज में जुटे डॉक्टरों की टीम ने युवती को ब्रेन डेड घोषित करने के बाद लंबे अरसे से किडनी की बीमारी से जूझ रहे दो लोगों को युवती की दोनों किडनी और एक अन्य लीवर की बीमारी से जूझ रहे एक व्यक्ति को एम्स, ऋषिकेश में पहली बार लीवर ट्रांसप्लांट कर नया जीवन दिया गया। खासबात यह रही कि यह दोनों जटिलतम शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएं एक साथ चली और पूरी तरह से सफल रही। जबकि एक व्यक्ति को अंग प्रत्यारोपण दिल्ली एम्स में किया गया। निदेशक एम्स प्रोफेसर डॉ. मीनू सिंह एवं संस्थान प्रबंधन ने संस्थागत स्तर पर अपनी तरह की इस पहली सफल उपलब्धि के लिए चिकित्सकीय टीम की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। परिजनों की सहमति प्राप्त होने के बाद एम्स ऋषिकेश में पहली मर्तबा सफलतापूर्वक पहला लीवर ट्रांसप्लांट को अंजाम दिया गया। बताया गया है कि नेशनल आर्गेन एंड टिसु ट्रांसप्लांट आर्गेनाइजेशन नोटो, की सहायता से आर्गेन डोनेशन के लिए जरूरतमंद मरीजों का पता लगाया गया और इसके बाद नोटो के तहत अंग दान के लिए आवंटित किए गए। गौरतलब है कि ऋषिकेश एम्स की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रोफेसर डॉ. मीनू सिंह की अध्यक्षता में संस्थान में बीते कुछ वर्षों से लीवर ट्रांसप्लांट की ट्रेनिंग संचालित की जा रही है। जिसके अंतर्गत बीते बृहस्पतिवार की रात निदेशक एम्स के निर्देशन में संस्थान में किडनी ट्रांसप्लांट की तर्ज पर एम्स ऋषिकेश में लीवर प्रत्यारोपण पूरी तरह से सफल रहा। बताया गया कि एम्स ऋषिकेश में बीते बृहस्पतिवार की रात करीब 9 बजे अंग प्रत्यारोपण प्रक्रिया शुरू की गई। जिसमें एम्स संस्थान के विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ चिकित्सकों की संयुक्त टीम ने हिस्सा लिया। इस कार्य को संस्थान के एक ही ओटी काम्पलेक्स में सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया। जिसके तहत एक साथ दो पेशेंट्स को अंग प्रत्यारोपित किए गए। प्रक्रिया के अंतर्गत एक पेशेंट से अंग लिए गए जबकि एक पेशेंट को किडनी दूसरे को लीवर ट्रांसप्लांट किया गया। इस जटिलतम प्रक्रिया को पहली मर्तबा सफलता से संपन्न करने से पता चलता है कि संस्थान में विशेषज्ञ चिकित्सकों की कितनी वृहद टीम लोगों को जीवनदान देने के लिए अपनी उपयोगिता के साथ ही योग्यता को सिद्ध करने में जुटी हुई है। बताया गया है कि यह संपूर्ण जटिलतम शल्य चिकित्सा प्रक्रिया बीते बृहस्पतिवार की रात 9 बजे शुरू की गई जो कि लगभग 13 घंटे यानि शुक्रवार सुबह 10 बजे तक चली।

दिल्ली एम्स भेजे गए एक किडनी और पेनक्रियाज

ग्रीन कॉरिडोर के माध्यम से डोनेट की गई एक किडनी और पेनक्रियाज को किसी जरूरतमंद पेशेंट को प्रत्यारोपित करने के लिए बीती बृहस्पतिवार की रात में ही दिल्ली, एम्स को भेजा गया है। बताया गया है कि एम्स दिल्ली को भेजे गए अंगों का भी प्रत्यारोपण पूरी तरह से सफल रहा।

टीम में यह विशेषज्ञ रहे शामिल

अंग प्रत्यारोपण को सफल बनाने वाली टीम में इन विशेषज्ञों ने अपना योगदान दिया। जिसके अंतर्गत अहमदाबाद के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. प्रांजल मोदी के मार्गदर्शन एवं गाइडेंस में एम्स अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर डॉ. बी. सत्यश्री, संस्थान के डॉ. कर्मवीर सिंह, डॉ. रजनीश अरोड़ा, डॉ. वाईएस पयाल, डॉ. अंकुर मित्तल, डॉ. विकास पवार, डॉ. रोहित गुप्ता, डॉ. आनंद शर्मा, डॉ. कल्याणी, डॉ. शैरोन कंडारी, डॉ. भारती, डॉ. भारत भूषण भारद्वाज, डॉ. सारंग भारती आदि विशेषज्ञ चिकित्सक अंग प्रत्यारोपण प्रक्रिया को सफलतापूर्वक अंजाम देने में शामिल रहे।

नवोदय टाइम्स

जाते-जाते तीन लोगों को जिंदगी दे गई युवती

- बीते माह 21 अप्रैल से चल रहा था एम्स ऋषिकेश में उपचार
- सड़क दुर्घटना में गंभीर घायल को एम्स चिकित्सकों ने घोषित किया था ब्रेन डेड

श्यामपुर, 1 मई (नवोदय टाइम्स): ईश्वर के बाद यदि कोई किसी इंसान को जिंदगी दे सकता है, तो वह सिर्फ अंगदान का पुनीत कार्य करने वाला व्यक्ति ही हो सकता है। और इस पुण्य के साक्षी और सशक्त माध्यम बनते हैं कलियुग में भगवान कहे जाने वाले चिकित्सक।

एम्स,ऋषिकेश में बीती रात कुछ ऐसा ही करिश्मा हुआ। जिसने न सिर्फ चिकित्सकीय इतिहास को पलट कर रख दिया अपितु इसके साथ साथ एम्स ऋषिकेश ने प्रतिबद्धता, संकल्प के साथ सफलतम चिकित्सा का एक नया कीर्तिमान भी रच दिया है।

एम्स, ऋषिकेश में हुआ पहला लीवर ट्रांसप्लांट

एम्स, ऋषिकेश में बीते माह एक 23 वर्षीय युवती सड़क दुर्घटना में गंभीररूप से घायल युवती को भर्ती कराया गया था, जहां ट्रॉमा सेंटर में चिकित्सकों की निगरानी में उसका उपचार किया जा रहा था। बीते दिवस इलाज में जुटे डॉक्टरों की टीम ने युवती को ब्रेन डेड घोषित करने के बाद लंबे अरसे से किडनी की बीमारी से जूझ रहे दो लोगों को युवती की दोनों किडनी और एक अन्य लीवर की बीमारी से जूझ रहे एक व्यक्ति को एम्स, ऋषिकेश में पहली बार लीवर ट्रांसप्लांट कर नया जीवन दिया गया। खासबात यह रही कि यह दोनों जटिलतम शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएं एक साथ चली और पूरी तरह से सफल रही। जबकि एक व्यक्ति को अंग प्रत्यारोपण दिल्ली एम्स में किया गया।

निदेशक एम्सप्रोफेसर(डॉ.)मीनू सिंह एवं संस्थान प्रबंधन ने संस्थागत स्तर पर अपनी तरह की इस पहली सफल उपलब्धि के लिए चिकित्सकीय टीम की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

परिजनों की सहमति प्राप्त होने के बाद एम्स ऋषिकेश में पहली मर्तबा सफलतापूर्वक पहला लीवर ट्रांसप्लांट को अंजाम दिया गया।

इस प्रक्रिया के तहत एम्स,ऋषिकेश ने उत्तराखंड में पहले लीवर ट्रांसप्लांट को सफलतापूर्वक अंजाम दिया, साथ ही संस्थान में बीते 3 वर्षों में 23वें व्यक्ति को सफलतापूर्वक किडनी प्रत्यारोपण किया गया। बात करीब दस दिन पुरानी है। बीते माह 21 अप्रैल को एक सड़क दुर्घटना के एक 23 वर्षीया युवती गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसे समुचित उपचार के लिए एम्स ऋषिकेश में भर्ती किया गया। अस्पताल में इलाज के दौरान बीते बृहस्पतिवार को युवती को चिकित्सकीय टीम ने ब्रेन डेड घोषित कर दिया। इसके बाद एम्स संस्थान के चिकित्सकों ने युवती के परिजनों को युवती के ऑर्गेन जरूरतमंद लोगों को दान कर उन्हें नया जीवन देने के पुण्य कार्य के लिए प्रेरित किया।

चिकित्सकों के परामर्श के बाद अपनी जवान बेटी को खो चुके परिजनों ने मौत से जूझ रहे किसी व्यक्ति को जिंदगी देने का फैसला किया और एम्स के चिकित्सकीय टीम को अंगदान आर्गेन डोनेशन की लिखित अनुमति प्रदान कर दी।

अमर उजाला

विदा होकर भी तीन जिंदगियों में रहेगी बिजनौर की निधि

संवाद न्यूज एजेंसी

ऋषिकेश। मृत्यु अंत नहीं, एक नई शुरुआत भी हो सकती है। इस सत्य को आलमपुर बिजनौर की निधि (23) ने चरितार्थ किया है। निधि ने दुनिया से जाते-जाते तीन लोगों को नई जिंदगी दी है। यह घटना न केवल भावुक कर देने वाली है, बल्कि समाज के लिए एक बड़ी प्रेरणा भी बन गई है।

बीते 21 अप्रैल को सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल निधि को उपचार के लिए एम्स में भर्ती कराया गया था। करीब दस दिनों तक जीवन के लिए संघर्ष करने के बाद बीते बृहस्पतिवार को चिकित्सकों ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया।

यह खबर परिजनों के लिए असहनीय थी, लेकिन उन्होंने एक ऐसा निर्णय लिया जिसने दुख को मानवता की मिसाल में बदल दिया।

चिकित्सकों ने निधि के परिजनों और

एम्स ऋषिकेश में पहली बार लिवर ट्रांसप्लांट कर दिया गया नया जीवन

पति को अंगदान के लिए प्रेरित किया। परिजनों और पति की सहमति के बाद निधि की दोनों किडनी और लिवर जरूरतमंद मरीजों को प्रत्यारोपित किए गए। इससे तीन लोगों को नया जीवन मिल सका।

दिल्ली एम्स भेजे गए एक किडनी और पैंक्रियाज : डोनेट की गई एक किडनी और पैंक्रियाज को ग्रीन कॉरिडोर के माध्यम से बीती बृहस्पतिवार की रात में ही दिल्ली, एम्स को भेजा गया है। बताया गया है कि एम्स दिल्ली को भेजे गए अंगों का भी प्रत्यारोपण पूरी तरह से सफल रहा।

टीम में ये रहे शामिल : अहमदाबाद के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. प्रांजल मोदी के मार्गदर्शन एवं गाइडेंस में एम्स अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर डॉ. बी सत्यश्री, डॉ. कर्मवीर सिंह, डॉ. रजनीश अरोड़ा, डॉ. शैरोन कंडारी, डॉ. वाईएस पयाल, डॉ. अंकुर मित्तल, डॉ. विकास पवार, डॉ. रोहित गुप्ता, डॉ. आनंद शर्मा, डॉ. कल्याणी, डॉ. शैरोन कंडारी, डॉ. भारती, डॉ. भारत भूषण भारद्वाज, डॉ. सारंग भारती आदि विशेषज्ञ चिकित्सक अंग प्रत्यारोपण प्रक्रिया को सफलतापूर्वक अंजाम देने में शामिल रहे।

ब्रेन डेड से मरीज को मिला लिवर

लिवर की बीमारी से जूझ रहे एक व्यक्ति को एम्स में पहली बार लिवर ट्रांसप्लांट कर नया जीवन दिया गया। कैडेवर डोनर (ब्रेन डेड) से मरीज को लिवर मिला। रीजनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन ने अक्तूबर 2023 में एम्स को लिवर ट्रांसप्लांट की अनुमति दे दी थी। तब से यहां इस सुविधा के शुरू होने का इंतजार किया जा रहा था। अब ढाई साल बाद एम्स में एक मरीज का लिवर प्रत्यारोपण कर इस जीवन रक्षक सुविधा को शुरू किया गया है। एम्स लिवर ट्रांसप्लांट की सुविधा वाला उत्तराखंड का पहला संस्थान है।

एक ओटी कॉम्प्लेक्स में हुए दो मरीजों के अंग प्रत्यारोपित

बीते बृहस्पतिवार की रात करीब 9 बजे अंग प्रत्यारोपण प्रक्रिया शुरू की गई जो कि लगभग 13 घंटे यानि शुक्रवार सुबह 10 बजे तक चली। जिसमें एम्स के विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ चिकित्सकों की संयुक्त टीम ने हिस्सा लिया। इस कार्य को संस्थान के एक ही ओटी कॉम्प्लेक्स में सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया, जिसके तहत एक साथ दो मरीजों को अंग प्रत्यारोपित किए गए।

पहली बार कैडेवर डोनर से किडनी ट्रांसप्लांट भी

रीजनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन ने आठ जनवरी 2021 को किडनी ट्रांसप्लांट की अनुमति एम्स को दी थी। तब से अब तक एम्स में 23 मरीजों को किडनी ट्रांसप्लांट की जा चुकी हैं। 10 मई 2023 को एम्स में पहली बार किडनी ट्रांसप्लांट किया गया था। यह सभी किडनियां मरीजों को जीवित दाताओं (परिजनों) ने दी थी। बीते 30 अप्रैल को एम्स में पहली बार कैडेवर डोनर (ब्रेन डेड डोनर) से किडनी ट्रांसप्लांट की गई है।

> सफलता का यह पहला पायदान है। एम्स इस दिशा में आगे तीव्रगति से सतत कार्य करते हुए उत्तराखंड के लोगों की चिकित्सा सेवा का कार्य करेगा। इसके साथ ही उन्हें अंगदान को लेकर जागरूक भी किया जाएगा। - **प्रो. मीनू सिंह,** निदेशक, एम्स ऋषिकेश

दैनिक जागरण

13 घंटे में पूरा हुआ एम्स में पहला लीवर ट्रांसप्लांट

एम्स ऋषिकेश में जटिलतम शल्य चिकित्सा गुरुवार रात नौ बजे शुरू हुई जो शुक्रवार सुबह 10 बजे पूरी हुई

जागरण संवाददाता, ऋषिकेश : एम्स ऋषिकेश ने उत्तराखंड में पहले लीवर ट्रांसप्लांट को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। जटिलतम शल्य चिकित्सा प्रक्रिया गुरुवार रात नौ बजे शुरू हुई। जो करीब 13 घंटे तक चली। वहीं, संस्थान में बीते तीन वर्षों में 23वें व्यक्ति को सफलतापूर्वक किडनी प्रत्यारोपण किया गया।

बीते 21 अप्रैल को सड़क दुर्घटना के एक 23 वर्षीय युवती गंभीर रूप से घायल हो गई थी। जिसे उपचार के लिए एम्स ऋषिकेश में भर्ती कराया गया। अस्पताल में इलाज के दौरान युवती को चिकित्सकीय टीम ने ब्रेन डेड घोषित कर दिया। इसके बाद एम्स के चिकित्सकों ने युवती के स्वजन को युवती के आर्गेन जरूरतमंद लोगों को दान कर उन्हें नया जीवन देने के लिए प्रेरित किया। चिकित्सकों के परामर्श के बाद जवान बेटी को खो चुके स्वजन ने मौत से जूझ रहे किसी व्यक्ति को जिंदगी देने का फैसला किया। युवती के परिजनों के इस निर्णय से जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहे तीन लोगों को जिंदगी मिल गई।

टीम में यह विशेषज्ञ रहे शामिल : अंग प्रत्यारोपण को लेकर अहमदाबाद के वरिष्ठ चिकित्सक डा. प्रांजल मोदी के मार्गदर्शन में एम्स अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक प्रो. डा. बी. सत्यश्री, संस्थान के डा. कर्मवीर सिंह, डा. रजनीश अरोड़ा, डा. वाईएस पयाल, डा. अंकुर मित्तल, डा. विकास पंवार, डा. रोहित गुप्ता, डा. आनंद शर्मा, डा. कल्याणी, डा. शैरोन कंडारी, डा. भारती, डा. भारत भूषण भारद्वाज, डा. सारंग भारती ने इस प्रकिया को अंजाम दिया।

दिल्ली एम्स भेजे गए एक किडनी और पैनक्रियाज

ग्रीन कारिडोर के माध्यम से डोनेट की गई एक किडनी और पैनक्रियाज को किसी जरूरतमंद मरीज को प्रत्यारोपित करने के लिए गुरुवार रात में ही दिल्ली, एम्स को भेजा गया है। बताया गया है कि एम्स दिल्ली को भेजे गए अगों का भी प्रत्यारोपण पूरी तरह से सफल रहा।

- तीन वर्षों में 23वें व्यक्ति का एम्स में किया गया सफलतापूर्वक किडनी प्रत्यारोपण
- ब्रेन डेड युवती के दान किए आर्गन से तीन जरूरतमंद लोगों को मिला नया जीवन

सफलता का यह पहला पायदान है, एम्स संस्थान इस दिशा में आगे तीव्र गति से कार्य करते हुए उत्तराखंड के लोगों की चिकित्सा सेवा का कार्य करेगा। इसके साथ ही उन्हें अंगदान को लेकर जागरूक भी किया जाएगा। जिससे स्थानीय स्तर पर लोग स्वैच्छिक तौर पर अंगदान प्रत्यारोपण के लिए आगे आने को प्रेरित हो और इस कार्य में बढ़चढ़कर हिस्सा ले सकें। पूरी टीम ने अच्छा काम किया।

- प्रो. मीनू सिंह, कार्यकारी निदेशक, एम्स ऋषिकेश

किडनी और लीवर प्रत्यारोपण की जटिल शल्य चिकित्सा प्रक्रिया एक साथ चली

चिकित्सकों की टीम ने युवती को ब्रेन डेड घोषित करने के बाद लंबे अरसे से किडनी की बीमारी से जूझ रहे दो लोगों को युवती की दोनों किडनी और लीवर की बीमारी से जूझ रहे एक अन्य व्यक्ति को एम्स, ऋषिकेश में पहली बार लीवर ट्रांसप्लांट कर नया जीवन दिया गया। यह दोनों जटिल शल्य चिकित्सा प्रक्रिया एक साथ चली और पूरी तरह से सफल रही। जबकि एक व्यक्ति को अग प्रत्यारोपण दिल्ली एम्स में किया गया। कार्यकारी निदेशक एम्स प्रोफेसर मीनू सिंह ने बताया कि पहली बार संस्थान में सफलतापूर्वक पहला लीवर ट्रांसप्लांट को अंजाम दिया गया। बताया कि नेशनल आर्गन एंड टिसु ट्रांसप्लांट आर्गेनाइजेशन (नोटो) की सहायता से आर्गेन डोनेशन के लिए जरूरतमद मरीजों का पता लगाया गया और इसके बाद नोटो के तहत अग दान के लिए आवटित किए गए। गुरुवार रात करीब नौ बजे अग प्रत्यारोपण प्रक्रिया शुरू की गई। जिसमें एम्स संस्थान के विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ चिकित्सकों की सयुक्त टीम ने हिस्सा लिया। 13 घंटे यानि शुक्रवार सुबह 10 बजे तक यह प्रक्रिया चली।